ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 3, May 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

इन्दिरा दाँगी की कहानियों में नारी गरिमा

Vijendra Prasad Meena

Assistant Professor in Hindi, S.P.N.K.S. Govt. (PG) College, Dausa, Rajasthan, India

सार

इन्दिरा दाँगी (अंग्रेजी:Indira Dangi (जन्म १३ फरबरी १९८०)) हिंदी भाषा की लेखिका हैं। [1] वे साहित्य अकादमी द्वारा सन् २०१५ के युवा पुरस्कार से सम्मानित हैं।[2] ज़ाहिर है इन्दिरा दाँगी ने व्यंग्य के धरातल पर स्त्री-विमर्श के नाम पर चल रहे अतिचार का पर्दाफ़ाश किया है।इन्दिरा दाँगी ने चेतना के पति ज्ञान का जो व्यक्तित्व निर्मित किया है,वह यहाँ अवश्य पठनीय है-"ज्ञान के जीवन में सिवाय चेतना के कोई स्त्री कभी न आई थी-वही पत्नी, वही प्रेयसी, वही साथी। एक स्त्री अपने पुरुष के जीवन में जो कुछ भी होती है या हो सकती है, वो सब कुछ थी चेतना ज्ञान के लिए।" प्रशंसा करनी चाहिए इन्दिरा दाँगी की जिन्होंने स्त्री-विमर्श के नाम पर चलनेवाली विकृत मानसिकता और उसके षड्यंत्र को उजागर किया है। उनकी प्रशंसा इस अर्थ में भी होनी चाहिए कि उन्होंने वासना-प्रसंगों को उद्घाटित करतेसमय भाषा के सांकेतिक सामर्थ्य का अद्भुत सहारा लिया है। कहीं भी चटखारे लेने की प्रवृत्ति नहीं है। स्त्री –विमर्श के एक और पहलू की ओर इन्दिरा दाँगी ने ध्यान आकृष्ट किया है-वह यह कि इस विमर्श के प्रवक्ता अपना निजी जीवन चाहे जैसा भी जियें लेकिन अगर कोई दूसरा थोड़ा भी स्वच्छंद जीवन जीना शुरू कर दे तो वह खटकने लगता है। इससे यह समझना कठिन नहीं है कि इन्दिरा दाँगी के इस उपन्यास का उद्देश्य जीवन-सत्य का अन्वेषण है। इस अन्वेषण में स्त्री-विमर्श को एक कारगर हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

परिचय

लेखिका और उपन्यासकार इंदिरा दाँगी ने कहा कि आज कोई जौहर को न्यायसंगत नहीं कह सकता है, लेकिन एक समय इसका जमकर महिमामंडप हुआ था. 'साहित्य आज तक' के 'कलम आजाद है तेरी' सत्र में चर्चित लेखिकाओं और उपन्यासकारों ने हिस्सा लिया. इस दौरान उन्होंने कलम की आजादी पर खुलकर अपनी राय रखी. जब इंदिरा दाँगी से सवाल किया गया कि कलम की आजादी का मतलब कहीं बोल्ड और बेलगाम लेखन तो नहीं, तो इस पर उन्होंने कहा, 'सहानुभूति और स्वानभूति में जो होता है, वही यहां पर भी है. पहले के लेखन और आज के लेखन का ढंग अलग है. आज हमारे हाथ में कलम हैं और हम जो महसूस करते हैं, वो लिखते हैं और इसको कोई रोक नहीं सकता है.'[1,2,3]

उन्होंने कहा कि प्रेमचंद्र की कहानी में पीड़ित महिलाओं की व्यथा लिखी गई है और आज भी महिलाओं की पीड़ा को ही लिखा जाता है. एक अन्य सवाल पर दाँगी ने कहा, 'हम सिर्फ स्त्री विमर्श नहीं लिखते हैं. हम मानवीयता की बात लिखते हैं. उन महिलाओं का दर्द लिखते हैं, जिनको जलाया जाता है, काटा जाता है, मारा जाता है, भेड़-बकरी की तरह किसी के भी साथ भेज दिया जाता है, रेप किया जाता है और प्रताड़ित किया जाता है.' जब उनसे पूछा गया कि क्या लेखन से समाज में बदलाव आया है, तो उन्होंने कहा कि आज कोई जौहर को न्यायसंगत नहीं कह सकता है, लेकिन एक समय इसका जमकर महिमामंडप हुआ था. लेखन की वजह से एक समय जौहर को सही बताया जाता था, लेकिन आज जो बदलाव दिख रहा है, यह लेखन का ही करिश्मा है. उन्होंने कहा कि पहले कोई महिलाओं की बात नहीं सुनता था, लेकिन आज समाज बदल गया है. अब महिलाओं के खिलाफ अपराध करने से लोगों को डर भी लगने लगा है. आज महिलाओं की बातें सामने आ रही हैं और मीडिया खबरें छाप रही है. महिलाएं अपनी बात को सार्वजनिक मंच पर आ रही हैं. यह कलम की ही देन है. इंदिरा दांगी में साहस है और इनकी कहानियां बेहद सशक्त हैं, भाषा इतनी अच्छी है, वाक्य इतने गठे हुए हैं कि लगता ही नहीं कि यह किसी नये कथाकार का संग्रह है. [5,7,8]

विचार-विमर्श

इंदिरा दांगी (हिंदी : इंदिरा दांगी) (जन्म 13 फरवरी 1980) एक हिंदी उपन्यासकार, नाटककार और लघु कथाकार हैं [2] उन्होंने एक उपन्यास, एक नाट्य नाटक और लघु कथाओं की दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। [1] उनके कार्यों को व्यापक रूप से प्रशंसित और स्वीकृत किया गया है। [3] [4] वह युवा पुरस्कार [5] और ज्ञानपीठ नवलेखन अनुशासन पुरस्कार की प्राप्तकर्ता हैं । [6] [7] आपने हिन्दी साहित्य में एम.ए. किया है।

देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कहानियाँ, नाटक आदि रचनाएँ प्रकाशित। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं—'हवेली सनातनपुर', 'रपटीले राजपथ' (उपन्यास); 'बारहसिंगा का भूत', 'शुक्रिया इमरान साहब' (कहानी); 'आचार्य' (नाटक) आदि।आपकी कहानियों के अनुवाद अंग्रेज़ी, उर्दू, मलयालम, ओड़िया, तेलगू, संथाली, कन्नड़, मराठी सहित कई भाषाओं में प्रकाशित।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

आप 'राष्ट्रीय पुरस्कार' (केन्द्रीय साहित्य अकादेमी), 'भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन अनुशंसा पुरस्कार', 'बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार' (साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश), 'रमाकांत स्मृति पुरस्कार' के अलावा अन्य कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं। "आचार्य' नई पीढ़ी को प्रतिभाशाली रचनाकार इंदिरा दांगी द्वारा लिखा गया पहला नाटक है। इंदिरा ने कहानियों और उपन्यासों से पाठकों व आलोचकों को समान रूप से प्रभावित किया है। कथा लेखन के साथ अब उन्होंने नाट्य लेखन की चुनौती स्वीकार की है। ' आचार्य ' उनका प्रथम पूर्णकालिक नाटक है,[9,10,11] जो हिंदी में मौलिक नाटकों के अभाव पर छिड़ी बहस के बीच प्रकाशित हो रहा है। यह नाटक साहित्यिक गतिविधियों, संपादकीय महत्त्वाकांक्षाओं और दीगर प्रपंचों को केंद्र में रखकर आकार प्राप्त करता है। समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता को पछोरती यह रचना उन तत्त्वों को बिलगाने का उपक्रम है जो विसंगतियों और विडंबनाओं का निर्माण करते हैं। इसके चरित्रों पर वास्तविकता की दिलचस्प छायाएँ हैं। नाटक यथार्थ को इस तरह परिभाषित करता है कि एक बृहत्तर निहितार्थ भी व्यक्त होता है। इसकी प्रमुख पात्र रोशनी के शब्दों में, '...अपनी-अपनी खुशफहमियों की व्यर्थता हरेक की आत्मा जानती ही है। फिर क्यों? क्यों हम जीते हैं इन व्यर्थताओं में? क्यों जेवरों की तरह लादे रहते हैं आडंबरों को? क्यों नहीं मुक्त कर देते अपने आप को अपने आप से ही? क्यों नहीं हम खुद को जीने देते वैसे, जेसा हम सच में जीना चाहते हैं।' पठनीयता और रंगमंचीयता दोनों तत्त्वों से संपन्न "आचार्य" 'समकालीनता की समीक्षा' है। 'खंड-खंड पाखंड पर्व" का उद्घाटन है। रंगकर्मियों को यह बेहद रुचेगा। रचनात्मक भाषा, अर्थसमृद्ध संवाद, विट व हयूमर का बेहतरीन प्रयोग आदि विशेषताओं के चलते इस नाटक को प्रसिद्धि मिलेगी ऐसा भरोसा है। इंदिरा दांगी की रचनाशीलता का यह नाट्य आयाम स्वागत योग्य है।

जानी-मानी कथाकारा इंदिरा दांगी के कथा संग्रह एक सौ पचास प्रेमिकाएं का लोकार्पण दिल्ली में चल रहे विश्व पुस्तक मेले में नामचीन समीक्षक नामवर सिंह ने किया। पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर अशोक बाजपेयी, केदारनाथ सिंह सहित साहित्य जगत की कई हस्तियां उपस्थित थीं।
प्रतिष्ठित प्रकाशन राजकमल से आए इस कथा संग्रह में विभिन्न मूड की इंदिरा की १३ कहानियां हैं। बकौल चित्रा मुद्गल इंदिरा की कहानियां परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व की कहानियां हैं। प्रतिष्ठित साहित्यकार ज्ञानरंजन का भी कथन है कि बुंदेलखंड से बाजार पटल पर आई एक नई लिखावट जिसने कम उम्र और कम समय में अपनी जगह बना ली है।

'सृजनात्मक लेखन' विषय पर अपने व्याख्यान में इंदिरा दांगी ने अपने अनुभवों के आधार पर विद्यार्थियों को साहित्यकार बनने के लिए न केवल टिप्स दिए बल्कि इस क्षेत्र की चुनौतियों से भी अवगत कराया। साहित्यकार के लिए भाषायी क्षमता को जरूरी बताते हुए इंदिरा दांगी ने कहा कि भाषा पर मजबूत पकड़ बनाने के लिए बोलियों और लोकोक्तियों की गहरी पहचान जरूरी है। लेखक को परकाया प्रवेश की कला भी आनी चाहिए है। परकाया प्रवेश का तात्पर्य है कि आप जिस विषय या जिस व्यक्ति पर लेखन कर रहे हैं, उसमें पूर्ण रूप से समा जाना, साहित्य की भाषा में इसे ही परकाया प्रवेश कहते हैं। उन्होंने कहा कि आप व्यक्ति के रूप में भले सीमित हैं लेकिन सामाजिक रूप से आपका दायरा बड़ा और व्यापक होता है। [12,13,15]

उन्होंने कहा कि हर कोई भी व्यक्ति या साहित्यकार कभी भी पूर्ण या परिपक्व नहीं होते हैं, वह जीवन भर सीखता हैं और अपनी क्षमता में निखार लाता है। इसलिए लिखने की शुरुआत में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। अमूमन हर व्यक्ति के अंदर एक सोया हुआ साहित्यकार होता है जिसे जगाने की मेहनत करने की आवश्यकता होती है। जो इसमें सफल हो जाता है वह लेखक साहित्यकार बन जाता है। इसलिए बिना संकोच के आपको पहले लिखना होगा और जब आप बार-बार लिखेंगे तो आपकी लेखनी मजबूत होती जाएगी।

अच्छे लेखन के लिए आपको अपने आप की सुनना चाहिए, आप वह काम करें जो आप अच्छे से कर सकते हैं। जब आप लिखते हैं तो साधन से ज्यादा महत्व साध्य का होता है। लेकिन असली चीज मौलिकता है और प्रतिभा भी यही है। कैरियर बनाने के लिए अपनी मौलिकता को बनाए रखिए, साहित्य में जो नया है वही लोकप्रिय होकता है। आज के दौर में व्यावसायिक लेखन पर उन्होंने कहा कि इसका कारोबार भले बढ़ रहा है लेकिन व्यावसायिक लेखन का रास्ता भी साहित्य से होकर ही गुजरता है, इसलिए साहित्य के बिना यह भी सार्थक और प्रभावी नहीं रह जाता है

परिणाम

इंदिरा दाँगी

जन्म: 13 फ़रवरी, 1980 (दतिया, मध्य प्रदेश)।
शिक्षा: एम. ए. (हिन्दी साहित्य)।
प्रकाशित पुस्तकें: कहानी-संग्रह—बारहसिंघा का भूत, एक सौ पचास प्रेमिकाएँ, शुक्रिया इमरान साहब; उपन्यास—हवेली सनातनपुर, रपटीले राजपथ; नाटक—रानी कमलापति, आचार्य।
अनुवाद: कहानियों का अंग्रेज़ी, नेपाली, उर्दू, तमिल, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, सन्थाली, मराठी आदि कुल 11 भाषाओं में अनुवाद।
मंचन: नाटकों का देश-विदेश में मंचन।[15,17,18]

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

पुरस्कार/सम्मान: रामजी महाजन राज्य सेवा पुरस्कार (म.प्र. शासन) 2010, वागीश्वरी सम्मान (हिन्दी साहित्य सम्मलेन) 2013, कलमकार पुरस्कार 2014, रमाकांत स्मृति पुरस्कार 2014, बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार (म.प्र. शासन) 2014, ज्ञानपीठ नवलेखन अनुशंसा पुरस्कार (भारतीय ज्ञानपीठ) 2014, साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार (साहित्य अकादेमी) 2015, दुष्यंत कुमार स्मृति पुरस्कार 2015, मोहन राकेश नाट्य अनुशंसा पुरस्कार (दिल्ली सरकार) 2017, युवा कहानीकार पुरस्कार 2017 (राजस्थान पत्रिका) एवं अन्य कई पुरस्कार।
देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ प्रकाशित। आकाशवाणी के लिए 15 वर्षों तक पटकथा लेखन।

इंदिरा दाँगी की भाषा में एक संयत खिलन्दड़पन है और कथा-विषयों की एक नई रेंज। यह दोनों ही चीज़ें उन्हें अलग से पढ़े जानेवाले कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित करती हैं। भाषा जब पाठक को अपने जादू में ले लेती है तब भी उनका किस्सागो सतर्क रहता है कि किस बिन्दु पर कौन-सा कदम उठाना है, कि कहानी भी आगे बढ़े और पात्र का न$क्शा भी ज़्यादा सा$फ हो। कह सकते हैं कि वे अपने विवरणों में एक नई किस्सागोई का आविष्कार करती हैं, शैलीगत चमत्कारों में उलझ कर नहीं रह जातीं। संग्रह की पहली ही कहानी 'लीप सेकेंड को कथाकार के रूप में उनकी क्षमताओं की बानगी के रूप में पढ़ा जा सकता है। एक बिलकुल अछूता विषय, फिर उसका इतना चित्रात्मक ट्रीटमेंट, आदमी की जिजीविषा को ज़िन्दगी की वास्तविक सड़क पर मूर्त करने की क्षमता, सराहनीय है। इसी तरह 'एक चोरी प्यासी घाटियों के नाम कहानी हमें व्यक्ति के आत्मान्वेषण के एक नए इलाके में ले जाती है और कहानी के रूप में अत्यन्त स्पष्टता के साथ अपना आकार पाती है। मध्यवर्गीय मन यहाँ अपनी सीमाओं को बहुत महीन ढंग से तोडऩे को व्याकुल दिखाई देता है। ऐसा ही कुछ 'एक नन्ही तितली आती तो है कहानी में देखा जा सकता है जिसकी ज़मीन तो उतनी नई है लेकिन जिस ढंग से वह अपनी शैली और अपने पात्रों को बरतती हैं, उसमें अपने ढंग का एक अलग आकर्षण है। [19,20]

निष्कर्ष

सुश्री दांगी ने कहा कि अमूमन हर व्यक्ति के अंदर एक सोया हुआ साहित्यकार होता है जिसे जगाने की मेहनत करने की आवश्यकता होती है। जो इसमें सफल हो जाता है वह लेखक साहित्यकार बन जाता है। इसलिए बिना संकोच के आपको पहले लिखना होगा. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल की व्याख्यानमाला 'स्त्री शक्ति संवाद' के अंतर्गत चर्चित उपन्यासकार-कथाकार सुश्री इंदिरा दांगी ने कहा कि सफल साहित्यकार बनने के लिए तीन आवश्यक तत्व होना जरूरी है- प्रतिभा, अध्ययन और अभ्यास। जिन लोगों में इन तीनों की पर्याप्तता है, वे निश्चित रूप से अच्छे और सफल लेखक बन सकते हैं। सफल साहित्यकार बनने के लिए मौलिकता और नवीनता एक अनिवार्य आवश्यकता है। बिना मौलिकता के कोई भी साहित्यकार लंबे समय तक नहीं चल सकता क्योंकि समाज या पाठकों को भी नित नई-नई रचनाएं चाहिए।[18,19] इसलिए हर साहित्यकार को अपने पाठकों के लिए कुछ ना कुछ नया देने की चुनौती हमेशा रहती है। सुश्री इंदिरा ने कहा कि हर कोई भी व्यक्ति या साहित्यकार कभी भी पूर्ण या परिपक्व नहीं होते हैं, वह जीवन भर सीखता हैं और अपनी क्षमता में निखार लाता है। इसलिए लिखने की शुरुआत में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। सुश्री दांगी ने कहा कि अमूमन हर व्यक्ति के अंदर एक सोया हुआ साहित्यकार होता है जिसे जगाने की मेहनत करने की आवश्यकता होती है। जो इसमें सफल हो जाता है वह लेखक साहित्यकार बन जाता है। इसलिए बिना संकोच के आपको पहले लिखना होगा और जब आप बार-बार लिखेंगे तो आपकी लेखनी मजबूत होती जाएगी। अच्छे लेखन के लिए आपको अपने आप की सुनना चाहिए, आप वह काम करें जो आप अच्छे से कर सकते हैं। जब आप लिखते हैं तो साधन से ज्यादा महत्व साध्य का होता है। लेकिन असली चीज मौलिकता है और प्रतिभा भी यही है। कैरियर बनाने के लिए अपनी मौलिकता को बनाए रखिए, साहित्य में जो नया है वही लोकप्रिय होकता है। आज के दौर में व्यावसायिक लेखन पर उन्होंने कहा कि इसका कारोबार भले बढ़ रहा है लेकिन व्यावसायिक लेखन का रास्ता भी साहित्य से होकर ही गुजरता है, इसलिए साहित्य के बिना यह भी सार्थक और प्रभावी नहीं रह जाता है।[19,20,21]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. http://gadyakosh.org/gk/ इन्दिरा_दाँगी
2. "युवा पुरस्कार". साहित्य अकादमी. अभिगमन तिथि 11 जनवरी 2017.
3. http://hi.pratilipi.com/indira-dangi
4. http://www.shabdankan.com/2015/03/kahani-paimane-by-indira-dangi.html
5. http://www.bhadas4media.com/book-story/335-indira-dangi-kalamkar-award
6. http://www.bhaskar.com/news/MP-BPL-HMU-india-dangi-found-sahitya-academi-yuva-award-5171824-PHO.html
7. http://www.deshbandhu.co.in/newsdetail/5046/3/0
8. "भारतीय ज्ञानपीठ"। ज्ञानपीठ.नेट। 21 दिसंबर 2016 कोमूलसे संग्रहीत। 21 दिसंबर 2016को लिया गया।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

9. ^ ललित कुमार। "हिन्दी साहित्य :: गद्य कोश :: हिन्दी साहित्य" । गद्य कोष . 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
10. ^ "इंदिरा डांगी की पुस्तक धन्यवाद इमरान साह की समीक्षा" । इंडिया टुडे । जुलाई 2016 । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
11. ^ "इंदिरा दांगी को रमाकांत स्मृति कहानी पुरस्कार" । Sasikmedia.com । 13 फरवरी 2016. 21 दिसंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
12. ^ "युवा पुरस्कार ::" । साहित्य अकादमी. 5 अगस्त 2016 को मूल से संग्रहीत । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
13. ^ "भारतीय ज्ञानपीठ" । ज्ञानपीठ.नेट । 13 फरवरी 1980। 21 दिसंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
14. ^ "भोपाल की इंदिरा दांगी को मिला साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार" । bhaskar.com । 19 नवंबर 2015 । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
15. ललित कुमार. "हिन्दी साहित्य :: गद्य कोश :: हिन्दी साहित्य" । गद्य कोष . 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
16. इंद्र दांगी. "इंदिरा दांगी/इंदिरा दांगी" । Hi.pratilipi.com । 21 दिसंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
17. "कहानी - बड़े पैमाने पर: इंदिरा दांगी | कहानी 'पैमाने' इंदिरा दांगी द्वारा|#शब्दांकन" । shabdankan.com । 27 मार्च 2015 । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
18. "भोपाल की इंदिरा दांगी को मिला साहित्य अकादमी का युवा पुरस्कार" । bhaskar.com । 19 नवंबर 2015 । 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
19. "सप्लिमेंट्स वो लड़की, मैं और ट्रेन" । देशबंधु.सीओ.इन . 21 दिसंबर 2016 को लिया गया ।
20. डांगी, इंदिरा (21 अप्रैल 2018)। "दाहिने आँखो" । अन्नपूर्णा पोस्ट । सुमन पोखरेल द्वारा अनुवादित । 24 मई 2018 को लिया गया .
21. डांगी, इंदिरा (10 दिसंबर 2016)। "बोटलको पानी" [बोतलबंद पानी]। अन्नपूर्णा पोस्ट । सुमन पोखरेल द्वारा अनुवादित । 25 मई 2018 को लिया गया .

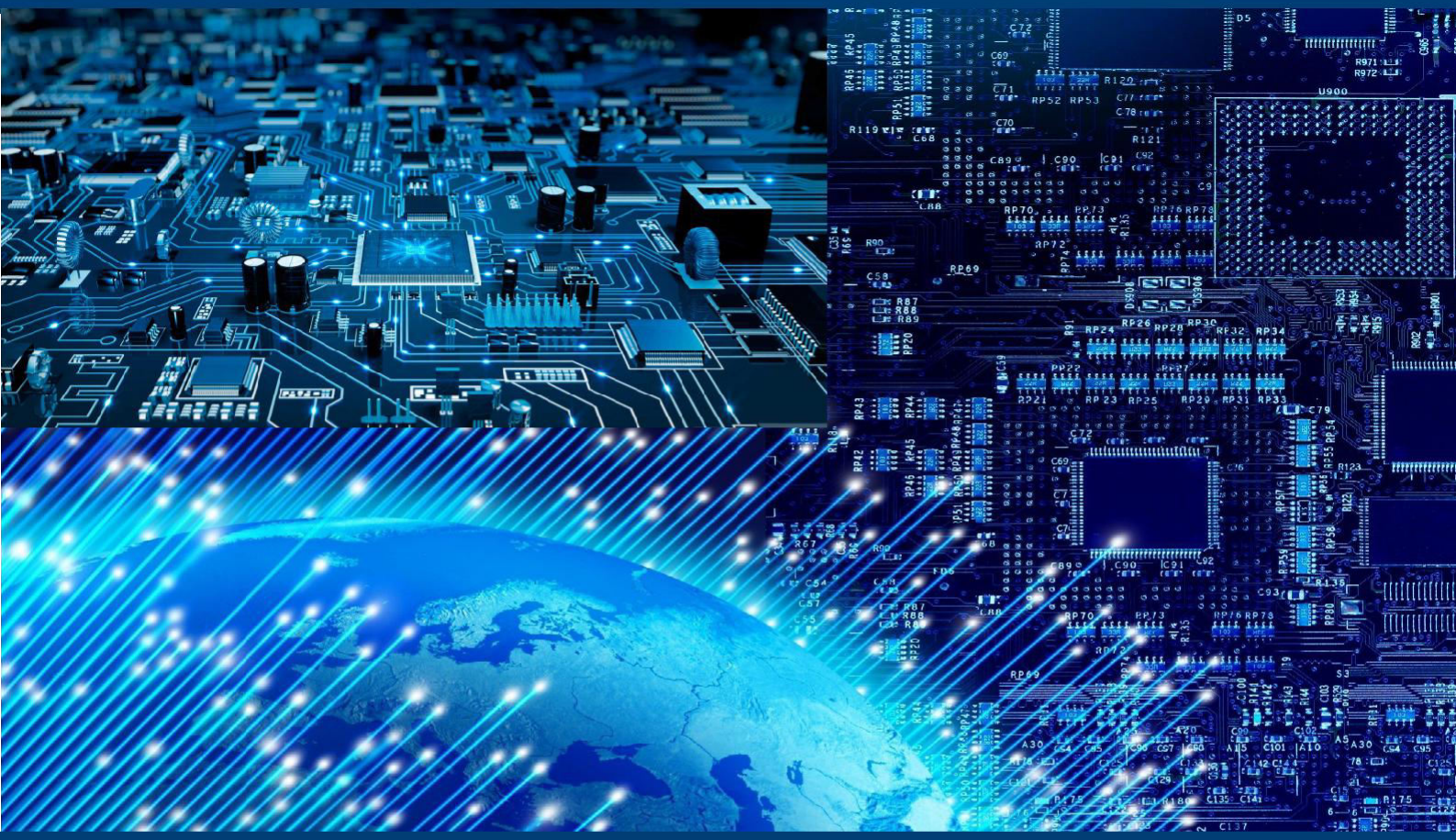

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |